मकर संक्रान्ति

स्वामी इन्दिरानन्द द्वारा लिखित

मकर संक्रान्ति भारत में मनाया जाने वाला एक त्यौहार है जो सूर्य देवता की उपासना हेतु समर्पित है—वे सूर्य भगवान जिनका प्रकाश इस ग्रह पर सभी प्राणियों का पालन-पोषण करता है। चूँकि इस दिन सूर्यदेव उत्तर दिशा में अपनी छः माह की यात्रा आरम्भ करते हैं, इसलिए मकर संक्रान्ति के बाद से उत्तरी गोलार्द्ध में दिन लम्बे होने लगते हैं। जिस साधक में श्रीगुरु की कृपा से अन्तर-जागृति हुई हो, उसके लिए, सूर्यदेवता की यह यात्रा जो 'उत्तरायण' कहलाती है, कुण्डलिनी शक्ति के आन्तरिक ऊर्ध्वगमन को दर्शाती है। आन्तरिक उत्तरायण की इस महायात्रा में कुण्डलिनी साधक के विभिन्न चक्रों से होते हुए दीप्तिमान, सहस्रदल कमल, सहस्रार की ओर बढ़ती है।

मकर संक्रान्ति भारत के उन कुछ पर्वों में से है जो सूर्य के राशि-संक्रमण-चक्र पर आधारित हैं। भारतीय पंचांग के अनुसार मकर संक्रान्ति आम तौर पर १४ जनवरी को मनाई जाती है।

संस्कृत शब्द 'संक्रान्ति' का अर्थ है, 'संक्रमण या प्रवेश' और वैदिक ज्योतिषशास्त्र के राशि चक्र में दसवीं राशि को 'मकर' राशि कहा जाता है। मकर एक पौराणिक जीव है जो थलचर और जलचर दोनों ही है। इसे प्रायः मगरमच्छ के रूप में दर्शाया जाता है। इसे मुख्यद्वार और चौखट का रक्षक माना जाता है।

मकर संक्रान्ति के दिन भारतभर में लोग महान योद्धा भीष्म पितामह का सम्मान करते हैं जो धर्म के मूर्तरूप थे। भारतीय महाकाव्य, महाभारत में भीष्म पितामह महायुद्ध में गम्भीर रूप से घायल हो गए थे, उन्हें हज़ारों बाण लगे थे। चूँकि उन्होंने धर्म के पथ पर चलते हुए अपना जीवन व्यतीत किया था, इसलिए उन्हें भगवान श्रीकृष्ण से इच्छामृत्यु का वरदान प्राप्त था। भीष्म पितामह ने शरीर का त्याग करने के लिए मकर संक्रान्ति का दिन चुना ताकि उनकी अन्तिम यात्रा प्रकाश के मार्ग का अनुसरण करे। सूर्य के उत्तर दिशा में यात्रा आरम्भ करने की पावन घड़ी की प्रतीक्षा करते हुए, बाणों की शय्या पर लेटे भीष्म पितामह ने अपने पौत्र युधिष्ठिर को पवित्र स्तोत्र श्रीविष्णुसहस्रनाम का उपदेश दिया।

मकर संक्रान्ति का उत्सव नवीनीकरण के समय के रूप में भी मनाया जाता है। मकर संक्रान्ति से दिन लम्बे होने लगते हैं और गरमी बढ़ने लगती है। धान के हरे-भरे लहलहाते खेत, सरसों के पीले-पीले फूलों से ढके ग्रामीण क्षेत्र और सुनहरे-हरे गन्नों की फसल की कटाई करते हुए किसान खुशियाँ मनाते हैं। इन लहलहाते, हरे-भरे खेतों को देखते समय किसी के भी मन में अनन्त सुनहरी धरती का विचार आता है। सम्पूर्ण भारत में लोग उत्सव मनाते हैं, बस स्थान के अनुसार त्यौहार का नाम बदल जाता है। उदाहरण के लिए महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश और तेलंगाना में यह मकर संक्रान्ति के नाम से; तमिल नाडु में पोंगल के नाम से; पंजाब और हरियाणा में लोहड़ी और माघी के नाम से; गुजरात में उत्तराण; और असम में माघ बिहू के नाम से यह त्यौहार मनाया जाता है।

भारत के महाराष्ट्र राज्य में, जहाँ सिद्धयोग आश्रम गुरुदेव सिद्धपीठ स्थित है, वहाँ मकर संक्रान्ति के दिन एक-दूसरे को तिल और गुड़ से बने लड्डू देने की प्रथा है। लोग एक-दूसरे को ये लड्डू देते हैं और मराठी में कहते हैं, "तिळगूळ घ्या, गोडगोड बोला" जिसका अर्थ है, "तिल-गुड़ के इस मीठे लड्डू को स्वीकार करें और एक-दूसरे से मधुरता से बोलें।" इस वाक्यांश के पीछे की भावना बहुत सुन्दर है—यह एक प्रोत्साहन है कि हम कटुता को भुला दें और संसार में व्याप्त मधुरता को एक बार फिर याद करें।

भारतभर में हज़ारों लोग, पतंग उड़ाकर मकर संक्रान्ति के महोत्सव में भाग लेते हैं। चाहे वे युवा हों या वृद्ध, पतंग उड़ाते-उड़ाते उनमें अकसर मुक़ाबला होता है। वातावरण में हँसी-ठहाके गूँजने लगते हैं—खेलने वालों के लिए और उनका खेल देखने व उनका उत्साह बढ़ाने आए लोगों के लिए, दोनों के लिए यह मज़ेदार होता है। पतंग उड़ाने वाले सभी लोग यह मनोकामना करते हैं कि तेज़ हवा बहे और उनकी पतंग को उड़ाकर आसमान की ऊँचाइयों तक ले जाए। हर व्यक्ति यह आशा करता है कि *उसी की* पतंग सूर्य देवता के सबसे नज़दीक पहुँचे।

जैसे-जैसे दिन बीतता जाता है, नीले आकाश में हरेक रंग, रूपाकार और माप की अनगिनत पतंगें उड़ती हुई दिखाई देती हैं। आकाश में पतंगों से बनी इस संरचना से गुज़रती सूरज की किरणें तेजस्विता से जगमगाती हैं, रंगों के इस अपवर्तन से धरती और उस पर खड़े लोग ऊर्जा व उल्लास से भर जाते हैं। यह एक अद्‌भुत दृश्य होता है।

मकर संक्रान्ति मनाने के अन्य सुन्दर तरीक़े हैं, 'नारायण, नारायण' का नामसंकीर्तन करना और 'सूर्यगायत्री मन्त्र' का गायन करना। सूर्य देवता का स्तुतिगान करने वाले इस सूर्यगायत्री मन्त्र को आदिगायत्री कहा जाता है, जो अनेक गायत्री मन्त्रों में से मूल व प्रधान मन्त्र है। इस गायत्री मन्त्र को ३,

११, २१, या १०८ बार [या इन संख्याओं से गुणा या भाग कर मिलने वाली संख्या में] गाना विशेषरूप से शुभ माना जाता है। आप सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर दिए गए सूर्यगायत्री मन्त्र की रिकॉर्डिंग के साथ इसे गा सकते हैं जो कि आह्लाद व ऊर्जा से भरपूर, राग विभास में संगीतबद्ध है।

© २०२५ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।